5-4-67 ओम शान्ति रात्रिक्लास

बाप का परिचय जबतक नही है तब तक और बातें करना फालतु है। अल्फ नीं समझा तो कुछ भी नीं समझा। इसलिये ही फार्म भरवाया जाया है कि पता पड़ता है कि किस प्रकारका मनुष्य है। गीता वाले जो है उनको सिर्फ कहना है कि बाप कहते है कि मुझे याद करो। मनमनाभव जिसको ही वशीकरण मन्त्र भी कहते है। दुनियाँ इसका अर्थ नही जानती। तुम जानते हो। वश करना है, किसको? माया को वश करने का यह मनमनाभव मन्त्र है। मनमनाभव कहो वा वशीकरण मन्त्र कहो। माया क्या है यह भी नही जानते है। रावण पर जीत कौन पहनावे? बाप आकर तुम बच्चों को मन्त्र देते है। जिससे तुम माया जीते जगत जीत बनते हो। मूल बात ही है मनमनाभव। बाप को याद करो। सो भी बाप कहते है गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये हूं बहू जैसे आशिक मशूक को याद करते है। यह है रूहानी बात। बाकी सब है जिस्मानी। भक्ति मार्ग में सब आशिक एक को याद करते है। हनुमान कैकितने लाखो आशिक होगें। अच्छा उनको हनुमान का दर्शन हुआ तो खुशी होगी। उनको भी वशीकरण मन्त्र कहेंगें। उनको वश कर लिया। साक्षात हो गया। तुम रावण को वश कर लेते हो। वशीकरण मन्त्र है नाँ। बाप ही वशीकरण मन्त्र देते है। राजाई लेने वाले कोटों में कोऊ निकलते है। बाकी प्रजा बहुत बनती रहती है। तुम वृधी को पाते रहेंगें। तुम वृधी को पाते रहेंगें। व्यर्थ तो होता ही नही है। रावण राज्य में सब वेस्ट जाता है। यहाँ कुछ भी वेस्ट नही जाता। इसको तो प्रारब्ध बनती है। तुम बच्चे ही जानते हो कि भगवान आया है भक्ति का फल देने। भल भक्ति सब धर्मों में है परन्तु आधा कल्प भक्ति किसने की होगी? भक्ति कब से शुरू हुई है यह किस को भी पता नही है। बाबा बिना कोई समझा नही सकते। दिल में समझना चाहिये कि जो कुछ होता है ड्रामा के प्लान अनुसार। हम पुरुषार्थ भी करते है ड्रामा के प्लान अनुसार। बाप भी कहते है मैं भी आकर पुरुषार्थ करवाता हूं ड्रामा के प्लान अनुसार। मत पर तो चलना पड़ेगा नाँ। जो मत दूं उसपर चलो। मत तो कल्याण करने के लिये ही देते है नाँ। कोई पूछते है मकान बनाऊं यह करूं? यह मत मेरे से क्यों पूछते हो। यह काम मेरा नही है। ऐसे तो फिर सब पूछ सकते है ऐसे तो माथा ही खराब कर देवें। यह राय इनसे पूछ सकते है। मैं तो आया हूं तुमको पतित से पावन बनाने के लिये। बाकी उन बातों की राय दादा से लो। मेरा पोर्टफोलियो नही है यह राय देने का। ड्रामा पर भी बहुत पक्का खड़ा रहना होता है। ऐसे नही ऐसे कि ऐसे नीं करना था। यह नीं होता था तो... बात हुई भूल हुई, ठीक है यह ड्रामा में था। आगे से खबरदार होकर चलना है। ड्रामा कहने से इतनी फिकरात नही आवेगी। भल माया के तूफान तो जरूर सबके पास आवेंगें। बाप कहते है मेरे पास तूफान नही आवेंगें। तुम्हारे दादा के पास आवेंगें। यह भी कहते है कि अन्त तक कुछ नीं कुछ होगा। जब आत्मा प्योअर है जोवगी फिर यह शरीर छोड़ना पडेगा। यहाँ रह नीं सकेगी। तूफान बहुत आते है। बाबा को तो बहुत आते है। इनको तूफान आवेंगें अनुभवी होगा तब तो बता सकेगा। बच्चों को यह तो निश्चय है कि अब हमको घर जाना है। बाबा आया है घर ले जाने के लिये। गीता में अक्षर बड़े अच्छे है बाप कहते है मामेकम याद करो। शिव बाबा कहते है मैं पतित पावन हूं। कृष्ण ऐसे कह नीं सके। निश्चय हो जावेगा कि बाप पढ़ाते है तो वो तीक-2 नीं करेंगें। उनके दिल में लग जावेगा। तीर लगेगा उनको जिसने भक्ति बहुत की होगी। टीचर एक ही है परन्तु समझने वालों में रात दिन का फर्क हो जाता है। कहाँ रंक कहाँ राव बन जाते है। पुरुषार्थ कर वर्सा पाना है। फादर को फालो करना है। फालो करने लिये बाप कितना उठाते है। श्वास पर भरोसा नही है। अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरनी चाहिये। माया मुंह फिरा देती है। सर्विस नही करते है तो गोया माया के बन जाते है। उससे बचना है। श्रीमत परचलना है नही तो माया के मुरीद है। कितने % माया की तरफ है कितने % बाबा की तरफ है बाबा सब देखते है। खुद को भी देखना है। गुड् नाईट